शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

'रंग में भंग' खंडकाव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना

आस्था बैरवा (शोधार्थी)
वनस्थली विद्यापीठ
टोंक, राजस्थान, भारत

शोध संक्षेप

बीसवीं सदी का युग वह समय है जब भारत गुलामी के कारण शोषण का शिकार था। जनता अत्याचारों से पीड़ित थी। त्रस्त समाज में अनेक विसंगतियाँ व्याप्त थीं। जनता में जागरूकता लाने का प्रयास एक तरफ समाज सुधारक कर रहे थे वहीं दूसरी और साहित्य के माध्यम से साहित्यकार भी जनता में चेतना लाने का प्रयास कर रहे थे। लोगों में राष्ट्रीय चेतना जागृत करने में इस युग के कवियों का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। इस युग का साहित्य राष्ट्रीय प्रेम को अभिव्यक्ति करने और देश के प्रति अपने फ़र्ज़ को निभाने की प्रेरणा देने में सहायक है। प्रस्तुत शोध पत्र में मैथिलीशरण गुप्त कृत 'रंग में भंग' खंडकाव्य में अभिव्यक्त राष्ट्रीय चेतना पर प्रकाश डाला गया है।

प्रस्तावना

प्रत्येक रचनाकार अपनी रचना के माध्यम से समाज के सामाजिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, आर्थिक विविध पहलुओं को अभिव्यक्ति प्रदान करता है। समाज के विभिन्न परिदृश्य रचनाकार की रचना में प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप में अवश्य प्रतिबिम्बित होते हैं, क्योंकि कोई भी रचनाकार स्वयं को पूर्णत: समाज से पृथक कर रचना करने में सफल नही हो पाता है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, इसीलिए वह समाज के दायरों में सदैव आबद्ध रहता है। बीसवीं सदी का युग सामाजिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से उथल-पुथल का समय रहा है। इस समय भारत अंग्रेजों की दासता की बेडियों से जकड़ा हुआ था। यह युग नव नवजागरण का युग रहा है। अनेक समाज सुधारकों ने इस समय समाज में जागृति लाने का प्रयास किया एवं अनेक समाज सुधार के कार्य किये। इनमें मुख्यत: राजा राम मोहनराय, स्वामी दयानंद सरस्वती, महादेव गोविन्द रानाडे, श्रीमती एनीबेसेंट, स्वामी विवेकानन्द इत्यादि समाज सुधारकों के नाम अग्रगण्य हैं।

इन समाज सेवकों ने समाज की अनेक रुढियों एवं अंधविश्वासों को दूर कर समाज का मार्ग प्रशस्त किया। इस समय के साहित्य में भी समाज को नवीन जागृति एवं चेतना देने का प्रयास स्पष्ट दिखाई देता है। इस समय के रचनाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से समाज में नवजागरण की लहर को और अधिक तीव्र गति प्रदान की। जनता में राजनीतिक चेतना को जागृत करने के साथ ही भारत को गुलामी की दासता से छुड़ाने का प्रयास भी इनके द्वारा किया गया। हिन्दी साहित्यकारों ने अपनी कविताओं के माध्यम से जनता में राष्ट्र प्रेम की अलख जगाई। 'माखनलाल चतुर्वेदी' इस समय के प्रमुख रचनाकर है, जिन्होंने अपनी कविताओ के माध्यम से नवयुवकों को स्वतंत्रता की प्रेरणा देने के साथ ही देश के लिए प्राण न्योछावर करने का सन्देश भी प्रदान किया -

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

"भरा नही है जो भावों से, बहती जिसमें रसधार नही,
वह हृदय नहीं है पत्थर है, जिसमे स्वदेश का प्यार नहीं।"1

इस समय के रचनाकारों ने भारतभूमि का गुणगान करते हुए अपने राष्ट्रीय प्रेम की अभिव्यक्ति की है। भारत के प्राचीन गौरव का बखान इन कवियों ने किया है। लोचन प्रसाद पांडेय ने मातृभूमि को सबसे बहुमूल्य माना है -

जय जय मम जनम भूमि स्वरगहुं ते प्यारी,
शोभित सुंदर रूप, अदभुत आभा अनूप,
दमकत जिमी जातरूप लोक न्यारी।।"2

कवियों ने भारत भूमि को स्वर्ग से भी महान मानते हुए इसकी महिमा का गुणगान किया है। हिन्दी साहित्य में भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिलीशरण गुप्त, सियाराम शरण गुप्त, सुभद्रा कुमारी चौहान, माखन लाल चतुर्वेदी, महावीर प्रसाद द्विवेदी, जयशंकर प्रसाद, रूप नारायण पांडये, लोचन प्रसाद पांडये इत्यादि साहित्यकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से भारत भूमि की महिमा का वर्णन किया है। गौरवशाली अतीत का वर्णन करते हुए भारतीयों को उससे प्रेरणा देने का प्रयास किया है।

इस समय के रचनाकार सियाराम शरण गुप्त ने मौर्य विजय' नामक खंडकाव्य में विदेशी सिल्यूकस के मुख से भारत की महानता का गान करवाकर अतीत की महिमा का बखान किया है -

जग में अब भी गूंज रहे हैं गीत हमारे,
शोर्य ,विर्य्र्य ,गुण हुए न अब भी हमसे न्यारे
रोम ,मिश्र ,चिनादि कांपते रहते है सारे,
यूनानी तो अभी अभी हमसे है हारे।3

तत्कालीन समय में भारत के प्राचीन गोरवशाली इतिहास के माध्यम से भारतीयों को प्रेरणा देने में इन साहित्यकारों की महती भूमिका रही है। इनका योगदान बहुमूल्य कहा जा सकता है।

'रंग में भंग' में राष्ट्रीय चेतना

मैथिलीशरण गुप्त २०वीं सदी के प्रमुख हस्ताक्षर हैं, जिन्होंने ऐतिहासिक और पौराणिक विषयों को केंद्र में रखते हुए विविध खंडकाव्यों की रचना की। गुप्त जी ने इस युग में सर्वाधिक खंडकाव्यों की रचना की है। लगभग 19 खंडकाव्य इनके द्वारा रचित हैं। 'रंग में भंग' खंडकाव्य इनका प्रथम खंडकाव्य माना जाता है, जिसकी रचना सन 1910 ई. में हुई। इसमें समाज के सभी पहलू उभर कर सामने आये हैं, परन्तु राजनीतिक पक्ष की गंभीरता इसमें स्पष्ट दिखाई देती है। इसकी कथा दो भागों में विभक्त है - एक का सम्बन्ध चितौड़ के सिसोदिया वंश के महाराणा खेतल के विवाहोपरांत अपने श्वसुर नृप लालसिंह से विग्रह के फलस्वरूप युद्ध में बलिदान और दुल्हन के सती होने से है। दूसरे का सम्बन्ध चित्तौड़ में नकली किले की रक्षा करते हुए हाडा कुम्भ के वीरगति प्राप्त करने से है। इस ऐतिहासिक घटना पर आधारित हिन्दी खंडकाव्य-रचना का प्रथम मौलिक प्रयास है।

मैथिलीशरण गुप्त ने इस खंडकाव्य के माध्यम से भारत के अतीत का बखान करते हुए भारतीयों में राष्ट्रीय चेतना लाने का प्रयास किया है। सुषुप्त भारतीय जनता को अतीत से प्रेरणा लेकर अपने कर्तव्यों के निर्वाह की प्रेरणा गुप्त जी ने दी है। तत्कालीन समय में यह प्रयास और भी अधिक सार्थक जान पड़ता है, क्योंकि जिस समय देश परतंत्र हो उस समय ऐसी रचना प्रेरणा देने, जागृति लाने में समर्थ जान पड़ती है।

गुप्त जी ने इस खंडकाव्य के माध्यम से 'अंग्रेजी साम्राज्य' का विरोध किया है। उनके शासन में भारतीय जनता त्रस्त थी। शासक को कैसा होना

शब्द–ब्रह्म
E ISSN 2320 – 0871
भारतीय भाषाओं की अंतर्राष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका 17 फरवरी 2017
पीअर रीव्यूड रेफ्रीड रिसर्च जर्नल

चाहिये, कैसे शासन किया जाये, इसे गुप्त जी ने भारत के अतीत से ग्रहण करने की प्रेरणा दी है -

प्रीति दोनों भाइयो में नित्य रहती थी बड़ी,
थी प्रजा संतुष्ट उनके सद्गुणों से हर घडी,
प्राण रहते तक उन्होंने न्याय को छोड़ा नहीं,
और अपने धर्म का बंधन कभी तोडा नहीं।4

भारत सदियों से परतंत्रता की बेडियों में जकड़ा हुआ छटपटा रहा था। भारतीयों की गुलामी की एक वजह भारतीय राजाओं दवारा की जाने वाली चाटुकारिता को भी माना जा सकता है। ये शासक मातृभूमि के अभिमान को मिटटी में मिला रहे थे। इनकी इस स्वार्थ और संकीर्ण मानसिकता को कवि ने प्रतीकार्थ रूप में अभियक्त किया है -

विज्ञ होकर भी अहो ! तुमने भला यह क्या किया ?
चाटुकारी में वृथा गौरव समस्त गमा दिया।
दरुपयोग न योग्य है करना कभी यों शक्ति का,
चाटुकारों में न होता लेश भी प्रभु - भक्ति का।।5

गुप्त जी ने इस रचना के माध्यम से स्वाभिमान की रक्षा की बात भी कही है। प्राण भी चले जाएँ, परन्तु अपनी आन-बान-शान एवं सम्मान को बनाये रखना चाहिये। यहाँ पर यह भी स्पष्ट होता है कि उन्होंने भारतभूमि को स्वतंत्र कराने के लिए प्राण न्यौछावर करने की प्रेरणा भी दी है। यह प्रतीकार्थ इन शब्दों में स्पष्ट होता है -

तब उन्होंने शीश अपना काट डाला आप ही ?
मारता तब मनुज को मानसिक संताप ही।
मृत्यु ही गति दिखती गौरव-गमन के शोक में ,
है मरण से भी बुरा अपमान होना लोक में।।"6

मातृभूमि के लिए गुप्त जी ने प्राण उत्सर्ग की प्रेरणा दी है। अवसर आने पर अपने कर्तव्यों के निर्वाह के लिए अपने प्राण भी देने पड़े तो निस्संकोच होकर अपना फर्ज पूरा करना चाहिए। मरण एक न एक दिन तनुधारियों का सिद्ध है,
जन्म से ही मरण का सम्बन्ध लोक प्रसिद्ध है।
किन्तु अवसर का मरण क्या सहज में मिलता कभी,
इसलिए अब हे पिता आज मुझे आज्ञा दीजे अभी।।7

वही जीवन सार्थक है जो किसी उद्देश्य के लिए जिया जाये। निरर्थक जीवन जीने से तो मृत्यु ही श्रेष्ठ है। भारत को आजाद कराने के लिए नवयुवकों को बलिदान देने का भाव यहाँ पर प्रतीकार्थ हुआ है।

मातृभमि ही हमारा पालन -पोषण करती है, वही हमें सींचती है, उससे ही हमारी पहचान बनती है। इसलिए प्रत्येक नागरिक का उसके प्रति कर्तव्य बनता है कि वह उसकी रक्षा तन-मन-धन से करे। मातृभूमि के कर्ज, ऋण से मुक्ति पाने के लिए कवि स्वतन्त्र करने की प्रेरणा नवयुवकों को दे रहा है। उसकी रक्षा के लिए प्राण अर्पण करने की अभियक्ति इन शब्दों में कवि ने की है -

जन्मदात्री ,धात्री ! तुझसे उऋण अब होना मुझे,
कौन मेरे प्राण रहते देख सकता है तुझे ?
मैं रहूं चाहे जहाँ, हूं किन्तु तेरा ही सदा,
फिर भला कसे न रक्खूं, ध्यान तेरा सर्वदा।।8

अंग्रेजी साम्राज्य को समाप्त करने का आह्वान कवि ने किया है। कवि चाहता है कि भारतीयों का सदियों से जो शोषण हो रहा है, वह अब समाप्त हो। कवि ने भारत को दासता की बेडियों से मुक्त करने की प्रेरणा देने के साथ ही अंग्रेजो को भारत भूमि छोडकर चले जाने की चेतावनी भी दी है। उनका मानना है कि अब भारत पर और अधिक समय तक अंग्रेजो का साम्राज्य नही रहेगा। अत: कवि ने खुले शब्दों में उसका बहिष्कार किया है -

अंत में फिर मैं यही कहता, तुम्हें प्रभु जान के।

लौट जाओ तुम यहाँ से बात मेरी मान के।।9

निष्कर्ष

यह खंडकाव्य उस समय लिखा गया था जब भारत गुलामी की जंजीरों में जकड़ा हुआ था। भारतीय जनता का शोषण हो रहा था और वह मुक्ति के लिए छटपटा रही थी। सदियों के शोषण और अत्याचार से जनता त्रस्त थी। लोगो में निराशा के भाव भर गए थे। अंग्रेजों के अन्याय और शोषण से सम्पूर्ण समाज त्रस्त था। जनता में जागृति नही थी न ही किसी प्रकार की आशा ही शेष थी कि विदेशियों की गुलामी से छुटकारा मिलेगा। ऐसे समय मैथिलीशरण गुप्त कृत 'रंग में भंग' खंडकाव्य वह रचना है जिसके माध्यम से रचनाकार ने न केवल भारत के गौरवशाली अतीत का वर्णन किया है वरन उससे निराश जनता को प्रेरित भी किया है। जिससे जनता अपनी आत्म-शक्ति को पहचाने और एकजुट होकर स्वतंत्रता के लिए अंग्रेजों के विरुद्ध आन्दोलन करें। प्रस्तुत खंडकाव्य में राष्ट्रीय भावों की सशक्त अभिव्यक्ति हुई और रचनाकार इस में सफल भी रहा है कि जनता में राष्ट्रीय भाव जगा सके। साथ ही स्वयं को आजाद कराने की प्रेरणा भी मिल सके।

संदर्भ ग्रन्थ

1 प्रकाश शास्त्री, भारतीय राजनीतिक विचार एवं व्यवहार: उभरते प्रतिमान, आरबीएसए पब्लिशर्स, जयपुर प्रथम प्रकाशन सन् 2002, पृष्ठ 65

2 सत्यनारायण डॉ.बी., द्विवेदी युगीन काव्य में सामाजिक चेतना, दक्षिणांचलीय साहित्य समिति, हैदराबाद, प्रथम संस्करण, जून 1986, पृष्ठ 89

3 वहीं, पृष्ठ 104

4 गुप्त, मैथिलीशरण, रंग में भंग, साहित्य-पब्लिकेशन्स, चिरगॉव, झाँसी, संस्करण - 2019 वि, पृष्ठ.-४

5 वही, पृष्ठ 11

6 वही, पृष्ठ 14

7 वही, पृष्ठ 21

8 वही, पृष्ठ 29

9 वही, पृष्ठ 33